मनोज
चित्र
कथा
मूल्य 3.50 संख्या 47
A Comic World Presentation
शेरबाज़ और
खूनी कंकाल का
रहस्य
www.comic-guy.blogspot.com
C.M.Vitankar
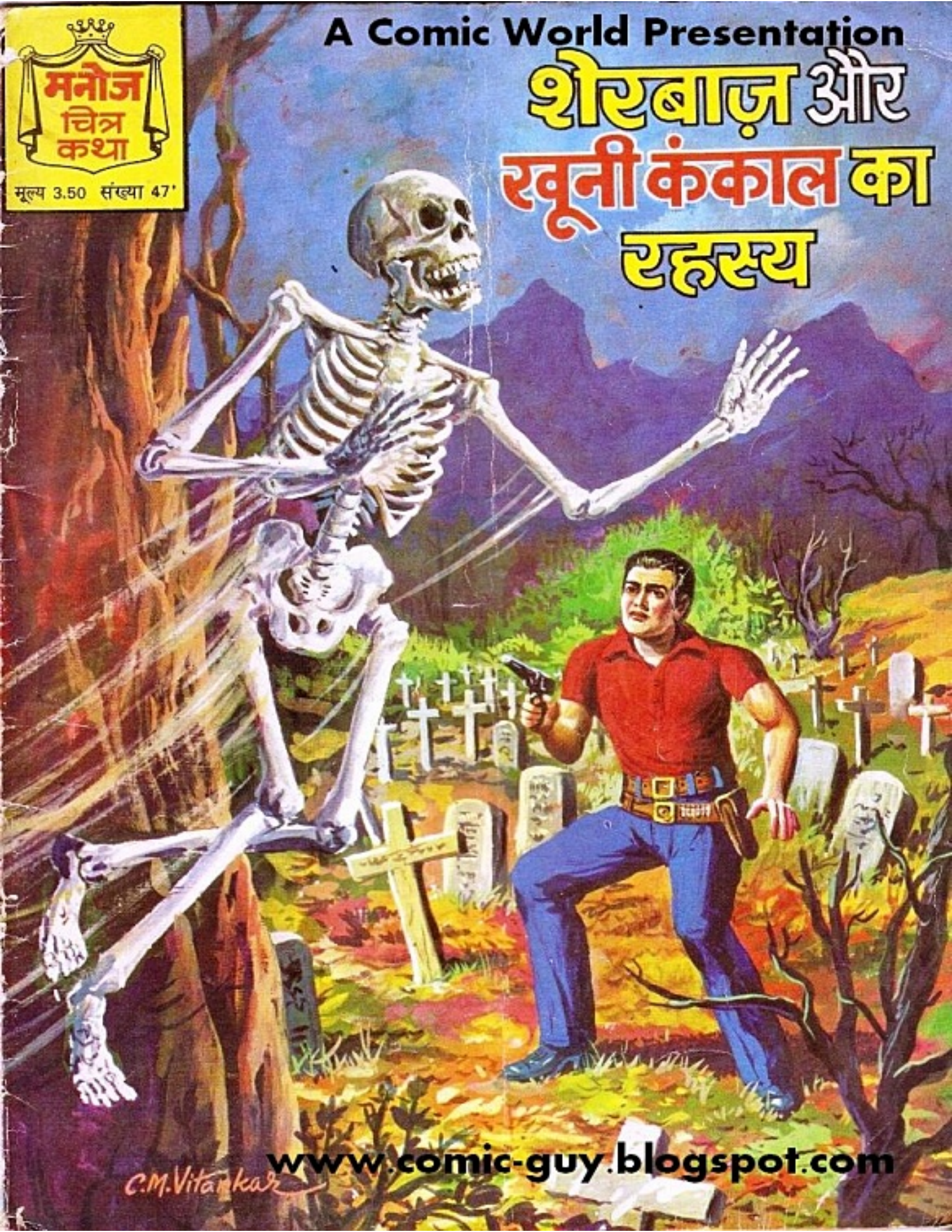
प्रकाशक : मनोज पॉकेट बुक्स, 1584, दरीबा कलाँ, दिल्ली-110006

वितरक : राजा सेल्स कॉरपोरेशन, 25/128, अग्रवाल मार्ग, शक्ति नगर, दिल्ली-110007

खूनी कंकाल का रहस्य
कथा एवं चित्रांकन—राणा ब्रदर्स

भारत के विश्व-विख्यात वैज्ञानिक प्रोफेसर स्वामीनाथन, जिन्होंने अणु ऊर्जा पर कई अनुसंधान किए थे, एक अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान सम्मेलन से लौटकर अभी अपने घर पहुंचे ही थे कि—
ट्रिन-ट्रिन
मंगू, देखो तो कौन है!

जैसे ही मंगू ने दरवाजा खोलकर बाहर झांका, उसके होश उड़ गये।
भ...भ...
भूत!

और वह डर के मारे बेहोश होकर फर्श पर गिर पड़ा।

मंगू की चीख सुनकर प्रो० चौंके—
ओह! यह चीख कैसी? ज़रा देखूं तो!
फिर वे तेजी से दरवाजे की ओर बढ़े।

दरवाजे पर पहुँचकर स्वामीनाथन ने जो कुछ देखा, वह वास्तव में ही चौंका देने वाला था। उनके सामने एक नर-कंकाल खड़ा था।
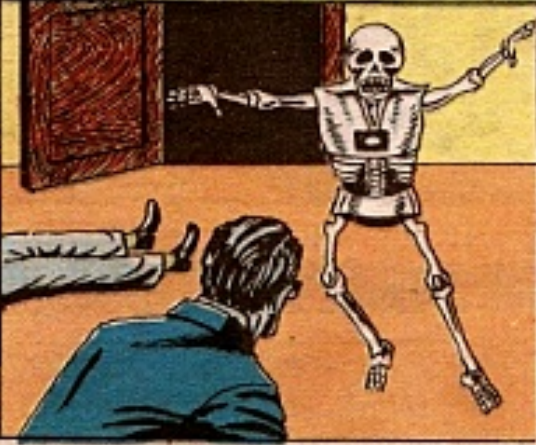
अरे, यह क्या? चलता-फिरता नर-कंकाल!

और इससे पहले कि प्रोफेसर स्वामीनाथन कुछ कर पाते, नर-कंकाल ने उन्हें धर दबोचा।
आह!

प्रो॰ स्वामीनाथन की हत्या करने के बाद नर-कंकाल हवा में उड़ गया।

अगले दिन देश के विभिन्न समाचार पत्रों ने इस घटना को अपने-अपने ढंग से प्रकाशित किया—
रत टाइम्स
या। का संदेह
क भूत पर।
हिन्दोस्तान
प्रो॰ स्वामीनाथन की हत्या
एक रहस्य।
हिन्दू समाचार
स्वामीनाथन अपने बंगले
मरे पाए गए।

वास्तव में ही पुलिस अधिकारी इस घटना से हैरान थे।
सर! नौकर मंगू का कहना है कि उसने भूत को अपनी आँखों से देखा है।
सब बकवास है। यह कोई और ही चक्कर लगता है!

पोस्टमार्टम की रिपोर्ट तो यही बताती है सर कि प्रो॰ की हत्या गला घोंट कर की गई है, लेकिन गले पर जो निशान पाये गये हैं, वे इतने गहरे हैं कि किसी भी तरह किसी आदमी की उंगलियों के निशान नहीं कहे जा सकते।
यही बात तो मुझे भी उलझन में डाल रही है!

अभी पुलिस इस सम्बन्ध में कोई निश्चित राय कायम भी नहीं कर पाई थी कि यह किसी भूत का काम था, अथवा किसी इन्सान का, कि अचानक एक दिन जब प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ॰ त्यागी अपनी प्रयोगशाला में काम करने में व्यस्त थे —

अपने पीछे एक घरघराती हुई आवाज़ सुनकर डॉ॰ त्यागी पलटे —

और—

तभी डॉ॰ त्यागी का सहायक प्रो॰ सिन्हा वहाँ आ पहुँचा।

इससे पहले कि प्रो॰ सिन्हा की समझ में कुछ आता, खूनी कंकाल ने झपटकर उसकी भी गर्दन दबोच ली।

दोनों की हत्या कर खूनी कंकाल वापस लौट पड़ा।

दो और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिकों की हत्या ने सारे देश में सनसनी फैला दी। हर जगह उस खूनी कंकाल की ही चर्चा थी।
बड़ी ही हैरानी की बात है कि खूनी कंकाल का शिकार सिर्फ़ बड़े-बड़े वैज्ञानिक ही हो रहे हैं।
ये वैज्ञानिक भी तो भगवान् से टक्कर ले रहे हैं। मेरे विचार में यह दैवी प्रकोप है।

अधिकांश लोग इसे भूतों का किस्सा कह रहे थे।
हाँ, यह तो कोई प्रेतात्मा है, जो इन वैज्ञानिकों से बदला ले रही है।
मेरा भी यही ख्याल है, क्योंकि सिर्फ भूत-प्रेत ही हवा में उड़ सकते हैं।

इन हत्याओं को लेकर पुलिस विभाग में भी खलबली सी मच गई और तुरन्त ही एक मीटिंग बुलाई गई।
अभी हमें पिछली हत्या का ही कोई सुराग नहीं मिला है, जबकि ये दो हत्याएं और हो गई हैं। गृह मंत्रालय से दबाव पड़ रहा है। यदि शीघ्र ही इस सम्बन्ध में कुछ नहीं किया गया तो हमारे विभाग की बड़ी बदनामी होगी।
हम अपनी ओर से पूरी कोशिश कर रहे हैं सर!

काफी छानबीन के बाद भी जब पुलिस के हाथ कोई सूत्र न लगा तो गृह मंत्रालय ने यह केस इंटेलिजेंस ब्यूरो को सौंप दिया।
मि० जैड। यह काम मैं तुम्हें सौंप रहा हूँ। यह इस केस की फाइल है।
ओ० के० चीफ! मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा।

पूरी फाइल पढ़ने के बाद—
एक सप्ताह में नर-कंकाल ने जिन तीन वैज्ञानिकों की हत्या की है, वे सभी अणु ऊर्जा अनुसंधान केन्द्र से सम्बन्धित थे ...पिछले महीने डॉ० बोस की भी हत्या हुई थी। वे भी इसी केन्द्र से सम्बन्धित थे।

लेकिन उनकी हत्या उनके सहायक प्रोफेसर आनंद ने की थी, जो इस समय जेल में है। जबकि अन्य वैज्ञानिकों की हत्या किसी नर-कंकाल ने की है।

हालांकि डॉ० बोस की हत्या और अन्य वैज्ञानिकों की हत्या के ढंग में अन्तर है, लेकिन फिर भी इन सब हत्याओं में एक बात विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है कि ये सभी वैज्ञानिक अणु ऊर्जा केन्द्र में एक साथ काम कर रहे थे। जिनमें से अब तक चार की हत्या हो चुकी है। एक जेल में है...बाकी बचे दो...

...वे हैं डॉ० सेन और प्रो० दारूवाला। मुझे सबसे पहले इन दोनों को ही चैक करना चाहिए।

पहले डॉ॰ सेन के घर चलता हूं!

जब मि॰ ज़ेड डॉ॰ सेन की कोठी पर पहुंचा—
डॉ॰ सेन अपनी इकलौती बेटी माला के साथ अमेरिका गए हुए हैं।
ओह!

उधर अपने निवास स्थल 'पक्षी विहार' पर शेरबाज अपने फार्म के मैनेजर दिलावर के साथ पक्षियों का अध्ययन करते हुए—
शेरबाज, जरा देखना यह कौन-सी किस्म की मुर्गाबी है?
इसे लाल सिर वाली बत्तख कहते हैं।

अचानक शेरबाज ने दूरबीन में एक विचित्र से प्राणी को उड़ते देखा—
अरे! यह क्या? यह तो नर-कंकाल है।

दिलावर भी उस उड़ते हुए नर कंकाल को देखकर हैरान रह गया।
मुझे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा।

कहीं यह वही नर-कंकाल तो नहीं, जिसने राजधानी में तहलका मचा रखा है?
हो सकता है!

मैं तो इस किस्से को कोरी गप ही समझ रहा था। यह तो वास्तव में ही कोई बड़ा चक्कर है!

शेरबाज़ को उस रात बड़ी देर तक नींद नहीं आई और वह सोचता रहा—
यह नर-कंकाल तीन वैज्ञानिकों की हत्या कर चुका है...

...इससे पहले डॉ० बोस की भी हत्या हुई थी। उस हत्या के आरोप में उनका सहायक आनंद पकड़ा गया था। जो अब जेल में है। क्यों न उससे मिला जाए, शायद उसी से इन हत्याओं का कोई सुराग मिल सके।

दूसरे दिन शेरबाज़ जेलर से मिला—
मुझे अफसोस है मि० शेरबाज़, आपने आने में बहुत देर कर दी। कल रात ही प्रो० आनंद की हत्या कर दी गई है।
ओह! यह कैसे हुआ?

जेलर ने पूरा किस्सा शेरबाज़ को सुनाया—
कल रात जब मैं राउंड पर था—
आ! ह! ह!
ओह, यह चीख कैसी?

...मैं दौड़ता हुआ चीख की दिशा में पहुँचा।
उफ़! वही खूनी कंकाल!
खबरदार, छोड़ दो उसे।

लेकिन मेरी धमकी का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मजबूर होकर मुझे उस पर गोली चलानी पड़ी, लेकिन—
ओह! गोलियों का तो इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा।
धांय!

मैं उसके पीछे दौड़ा। वह खूनी कंकाल मुजरिम आनंद की कोठरी में जा पहुँचा और—
आ...ई... ई...

फिर जो कुछ मैंने देखा, उससे मेरे रोंगटे खड़े हो गये।
उफ़!

फिर वह कंकाल आनंद की हत्या कर निकल भागा, जबकि हम अपनी पूरी कोशिशों के बावजूद भी उसका कुछ न बिगाड़ सके।
ओह!

इस सूचना से निराश होकर शेरबाज प्रो० दारूवाला के घर की ओर चल पड़ा।

प्रो० दारूवाला के बंगले पर —
हैलो प्रोफेसर, मुझे शेरबाज़ कहते हैं।
ओह शेरबाज़। आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। आपके बारे में मैं काफी कुछ सुन चुका हूँ। कहिए आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ।

प्रोफेसर, मैं आपसे उस खूनी कंकाल के बारे में कुछ बातें करना चाहता था।
मि० शेरबाज़, मैं भी हैरान हूँ। समझ में नहीं आता कि यह सब क्या चक्कर है। मेरे तीन पुराने साथी और देश के महान् वैज्ञानिक उसी कंकाल द्वारा मार डाले गए हैं...

...इससे पूर्व मेरे एक अन्य सहयोगी डॉ० बोस को हमारे ही सहयोगी प्रो० आनंद ने मार डाला था। इस तरह हमारा देश अब तक चार महान् वैज्ञानिकों से हाथ धो चुका है।

आपको जानकर दुःख होगा कि प्रो० आनंद की भी कल रात जेल में हत्या कर दी गई है।
ओह! प्रो० आनंद की भी हत्या कर दी गई। लगता है यह कोई गहरी साजिश है...

मैं डॉ० सेन के बारे में बहुत चिन्तित हूँ। लगभग दो महीने पहले वे अमेरिका गए थे, परन्तु वहाँ जाने के बाद उनका कोई समाचार ही नहीं मिला। कहीं उनकी भी हत्या तो नहीं हो गई।
ठीक है प्रोफेसर! मैं पहले डॉ० सेन के बारे में ही पता करता हूँ।

वहाँ से लौटकर शेरबाज़ ने सीधे हवाई अड्डे पर फोन किया —
मैडम, क्या आप बता सकती हैं कि आज से दो माह पूर्व सात जुलाई को फ्लाइट नं० जे० एल० 431 से कोई डॉ० सेन और उनकी लड़की माला अमेरिका को रवाना हुए थे अथवा नहीं।
क्या बात है श्रीमान, अभी-अभी एक और आदमी फोन पर उनके ही बारे में पूछ रहा था... खैर, आपको भी बता दूँ, डॉ० सेन और उनकी लड़की माला उस फ्लाइट से नहीं गए।

हुम्म! तो डॉ॰ सेन अमेरिका नहीं गए। लेकिन वे कहाँ हो सकते हैं और वह दूसरा आदमी कौन हो सकता है, जिसने डॉ॰ सेन के बारे में पूछताछ की है। मुझे तुरन्त उनके बंगले को चैक करना चाहिए।

फिर शेरबाज सीधा डॉ॰ सेन के बंगले पर पहुँचा।
दरवाजे पर तो ताला लगा है, लेकिन वह खिड़की खुली है। जरूर कोई गड़बड़ मालूम पड़ती है, मुझे भीतर जाकर देखना चाहिए।

बंगले के पीछे की दीवार फांदकर शेरबाज़ भीतर कूदा...

...और खुली खिड़की से भीतर प्रविष्ट हो गया।

भीतर पहुँच कर—
अरे, यह दरवाजा तो खुला पड़ा है। जरूर कोई यहाँ आया है।

तभी उसे सामने वाले कमरे में टार्च की रोशनी दिखाई दी।
हुम्म, कोई पहले से ही भीतर घुसा हुआ है।

दबे पांव शेरबाज बड़ी सतर्कता से उस ओर बढ़ा, परन्तु तभी अंधेरे में कोई चीज़ उसके हाथ से टकराकर आवाज़ करती हुई गिर पड़ी।

और भीतर मौजूद आदमी एक ही छलांग में टार्च बुझाकर शेरबाज़ के सामने हाथ में पिस्तौल लिए आ गया।

परन्तु शेरबाज़ की फुर्ती से वह परिचित नहीं था।
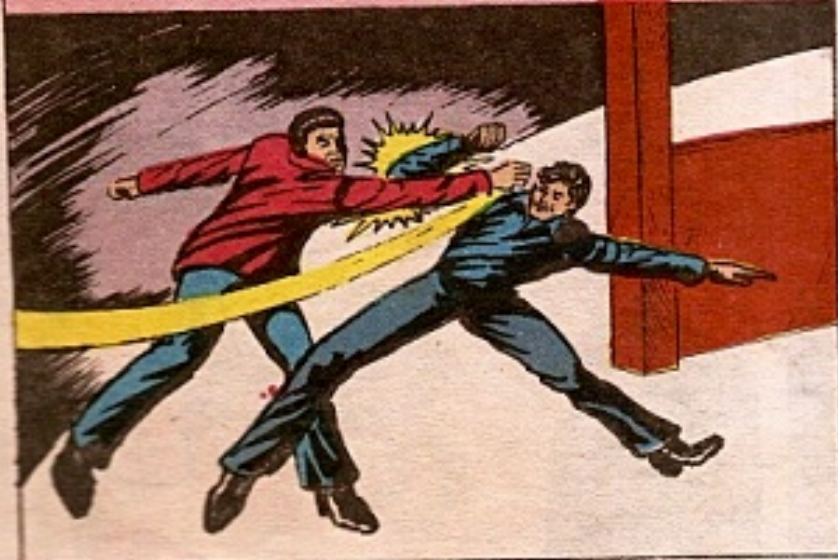
आदमी जोरदार है।
कोई माना हुआ लड़ाकू लगता है।

तभी शेरबाज का झटका खाकर मि० ज़ैड कमरे की दीवार से टकराया और उसके हाथ से बिजली का स्विच दब गया और सारा कमरा रोशनी से जगमगा उठा।

दोनों छिटककर एक-दूसरे से दूर खड़े हो गए।
यह कौन हो सकता है?
अरे !

और तभी मि० ज़ैड मुस्कराता हुआ शेरबाज़ की ओर बढ़ा—
मिस्टर, मेरे ख्याल से आप शेरबाज़ ही हैं!

आप का ख्याल गलत नहीं, लेकिन आप...?
मैं गुप्तचर विभाग का एजेंट ज़ैड हूं। आपका नाम हमारे विभाग में इज्ज़त के साथ लिया जाता है, मगर आप यहाँ कैसे?

मैं भी आपकी ही तरह अपने देश के महान् वैज्ञानिकों की हत्या और खूनी कंकाल के रहस्य को जानने की कोशिश कर रहा हूं।

फिर शेरबाज़ को पता चला कि उससे पहले फ़ोन द्वारा पूछताछ करने वाला आदमी मि० ज़ेड ही था।
विचित्र मुलाकात हुई मित्र!
चिरस्मरणीय रहेगी।

उसके बाद दोनों ने डॉ० सेन के घर की पूरी छानबीन की, परन्तु उनके हाथ कोई भी सूत्र न लगा, जिससे उन्हें कोई सहायता मिलती। फिर दोनों बंगले से बाहर आ गए।
अच्छा मि० ज़ेड! आप अपनी खोज जारी रखें। मैं अपने ढंग से लगा रहूंगा।
ठीक है मि० शेरबाज़, इस कंकाल का रहस्य तो मालूम करना ही पड़ेगा।

और फिर मि० ज़ेड से विदा लेकर शेरबाज़ 'पक्षी विहार' पहुंचा।
शेरबाज़, आज फिर मैंने उसी नर-कंकाल को उसी दिशा में उड़कर जाते देखा है।
अच्छा! तो कल ही मैं उस ओर जाऊंगा।

दूसरे दिन शेरबाज़ उस दिशा की ओर चल पड़ा, जिस तरफ वह कंकाल उड़ कर उन्हें जाता दिखाई दिया था।

काफी दूर जाने के बाद एक जगह—
क्या कभी यहाँ किसी को कोई उड़ता हुआ नर कंकाल दिखाई दिया है?
हाँ साहब! पिछले कुछ दिनों से हमने अक्सर एक कंकाल को उड़कर उस पुराने खण्डहर के पास वाले कब्रिस्तान की ओर जाते देखा है।

क्या आप मुझे वहाँ तक पहुँचा सकते हैं ?
नहीं-नहीं, मैं वहाँ नहीं जाऊंगा और आप भी वहाँ मत जाइए। सभी वहाँ जाने से घबराते हैं। वहाँ भूतों का अड्डा है। परसों ही हमारे गांव का एक आदमी उन भूतों का शिकार हो चुका है।

फिर शेरबाज़ किसान द्वारा बताई दिशा में बढ़ गया। कुछ देर बाद उसे पुराने खण्डहरों के अवशेष दिखाई दिए।
वही पुराना खण्डहर मालूम देता है!

खण्डहरों के निकट पहुँचने पर शेरबाज को एक लड़का एक पेड़ के नीचे बैठा कोई गाना गाता दिखाई दिया।
यह लड़का तो यहाँ बैठा बड़ी मस्ती में गा रहा है। क्या इसे भूतों का डर नहीं।

शेरबाज़ उसके निकट पहुँचा—
बहुत अच्छा गाना गाते हो बेटे, क्या नाम है तुम्हारा ?
ही-ही-ही- लोग मुझे बावला कहते हैं साहब! क्या आपको मेरा गाना अच्छा लगा ?

हाँ बेटे! तुम तो बहुत अच्छा गाते हो। कभी मेरे फार्म पर आना- यहाँ से सिर्फ दस किलोमीटर दूर है। मैं तुम्हारी आवाज रिकार्ड कर के तुम्हें सुनाऊंगा।
जैसे फिल्मी गाने सुने जाते हैं ?

हाँ-हाँ, बिल्कुल वैसे ही।
तब तो मैं जरूर आऊंगा साहब।

अच्छा सुनो, क्या तुमने यहाँ कभी भूत देखे हैं ?
हाँ-हाँ साहब, कल ही उस खण्डहर की छाया में लेटा मैं गीत गा रहा था कि तभी मैंने एक भूत को हवा में उड़कर आते हुए देखा। फिर वह भूत कब्रिस्तान में उस बड़े पीपल के पास उतरकर गायब हो गया।

ठीक है बेटे, मैं कल फिर आऊंगा।
जरूर आना साहब, मैं इन्तजार करूंगा।

फिर शेरबाज़ पक्षी विहार के लिए वापस लौट पड़ा।

रात को शेरबाज़ फिर उसी कब्रिस्तान में पहुंच गया।
यही है वह पीपल का बड़ा पेड़!

पीपल के पेड़ के पास एक बड़ी कब्र थी।

मुझे इस कब्र के पास ही छुपकर बैठ जाना चाहिए।

फिर शेरबाज़ उस बड़ी कब्र के पास ही घनी झाड़ियों में छुपकर बैठ गया।

रात के सन्नाटे में तरह-तरह की आवाजें आ रही थीं।
ऊ...ओ...

उधर... उसी रात प्रो० दारूवाला के घर के बाहर पुलिस के दो सशस्त्र जवान पहरा दे रहे थे कि...

...अचानक एक आकृति दीवार के पीछे से निकलकर उनके सामने आ गई।
कौन है? वहीं रुक जाओ!

एक सिपाही ने उस पर टार्च की रोशनी डाली तो उस छाया का चेहरा देखकर दोनों चौंक पड़े।
अरे!
वही भूत!

इससे पहले कि दोनों अपनी बंदूकें संभाल पाते, उस खूनी कंकाल ने एक जोरदार धक्के से दोनों को जमीन पर गिरा दिया।
तड़ाक!
ठक!

फिर वह कंकाल दीवार फांद कर भीतर जा पहुँचा।
गुर्रर्र!

तभी प्रोफेसर दारूवाला का पालतू कुत्ता गुर्राता हुआ खूनी कंकाल पर झपटा।
भौं...भौं...

परन्तु खूनी कंकाल ने उसे टांगों से पकड़कर...
हफ!

...तीन-चार बार जमीन पर दे मारा तो कुत्ते के प्राण-पखेरू उड़ गए।
कैं...ऊँ
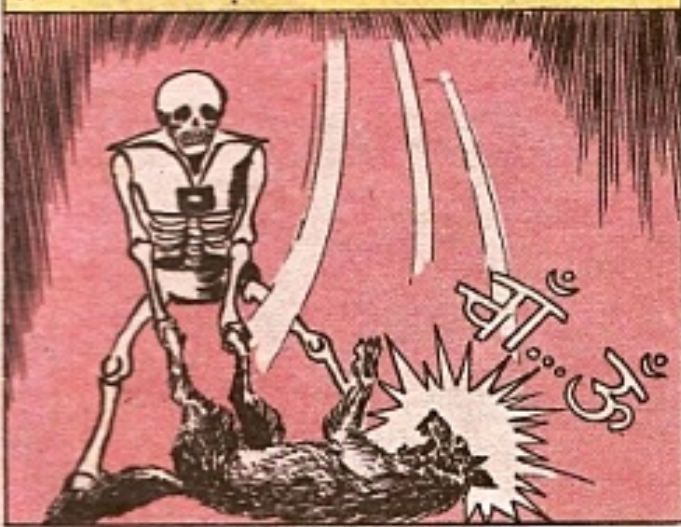
कुत्ते की चिल्लाहट सुनकर प्रो० दारूवाला की नींद खुल गई।

और वह अपना भरा हुआ रिवाल्वर निकालकर दरवाजे की ओर बढ़ा।
देखूं तो कुत्ता इतनी बुरी तरह क्यों चिल्लाया!

जैसे ही उसने दरवाजा खोला—

अपने होश-हवास काबू में रखते हुए प्रो० दारूवाला ने खूनी कंकाल पर सभी गोलियाँ चला दीं। परन्तु उन गोलियों का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
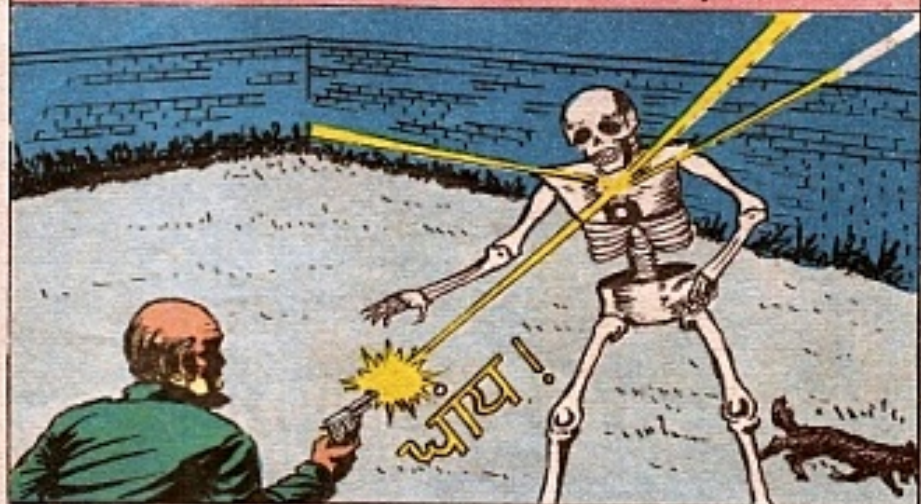
और प्रो० दारूवाला भी उस खूनी कंकाल के पंजों से बच न सका।

प्रो० दारूवाला की हत्या कर वह कंकाल बड़ी तेजी से उड़ता हुआ अन्धेरे में गायब हो गया।

फिर वह कंकाल उड़ता हुआ कब्रिस्तान में जाकर उतरा, जहाँ शेरबाज़ छुपा बैठा था।

भीतर पहुँचकर कंकाल एक दरवाजे की तरफ बढ़ा। उसे देख दरवाजे पर खड़ा एक सशस्त्र विदेशी एक ओर हट गया।

हम्म, इतना बड़ा तहखाना! यह तो कोई बड़ा चक्कर नजर आ रहा है। खैर, पहले इससे निपटूं।

...और उसे बेहोश कर बड़ी सतर्कता से आगे बढ़ा।

आगे एक बड़ा कमरा था जिसमें से कुछ आवाजें आ रही थीं।
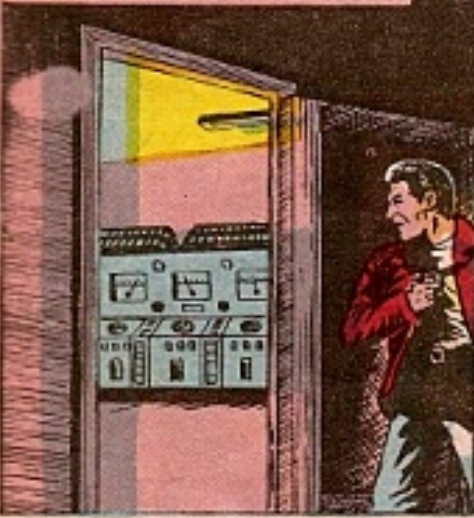
शेरबाज ने भीतर झांककर देखा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। भीतर डॉ० सेन और उसकी लड़की कुर्सियों पर बंधे बैठे थे। एक कोने में मि० जैड बंधा पड़ा था और तीन विदेशी उनके सामने खड़े थे। कमरे में तरह-तरह के वैज्ञानिक उपकरण लगे हुए थे। और खूनी कंकाल एक कोने में बुत की तरह खड़ा था।

डॉ० सेन! अब मेरा काम खत्म हो चुका है। अब सिर्फ तुम्हीं बचे हो।
पर डगलस, तुम्हें मेरी बेटी को छोड़ना पड़ेगा। तुमने वादा किया था। मुझे अपनी कोई चिन्ता नहीं।

वादा! हा-हा-हा-! बड़े भोले हो डॉ० सेन। इतना कुछ जानने वालों को भी कभी जिन्दा छोड़ा जाता है।

डॉ० सेन! यह तुम्हारा बनाया रोबोट ही तुम्हें खत्म करेगा। फिर तुम्हारी लड़की और इस कुत्ते जासूस का नंबर आएगा।

इतना कहकर वह विदेशी एक स्विच-बोर्ड की ओर बढ़ा।

लेकिन तभी—
ठहरो! तुम्हारा खेल खत्म हो गया है। अपने हाथ ऊपर कर दो।
???

इससे पहले कि माईक नामक विदेशी कुछ कर पाता, शेरबाज़ की पिस्तौल गरज उठी—

इतने में तीसरा विदेशी पीछे से शेरबाज़ पर झपटा—

परन्तु शेरबाज़ की नज़रों से कुछ भी न छिपा था।

ठक

तब तक डगलस भी पिस्तौल निकाल चुका था, पर शेरबाज़ उससे कहीं अधिक तेज निकला।

इतने में माईक ने एक बार फिर कोशिश की, परन्तु शेरबाज़ के एक फौलादी घूंसे ने उसे चित्त कर दिया।
टिशुं

लेकिन तभी डगलस ने छलांग लगाकर एक स्विच दबा दिया।

और खूनी कंकाल शेरबाज़ की ओर बढ़ने लगा–
इस कंकाल पर गोली का तो कोई प्रभाव नहीं पड़ता इसलिए कोई दूसरा ढंग अपनाना पड़ेगा।

उधर डगलस स्विच बोर्ड पर कंकाल को कन्ट्रोल कर रहा था।

इधर शेरबाज़ ने अपनी तरफ बढ़ते हुए कंकाल के सीने में पूरे जोर से ठोकर मारी और एक बार तो कंकाल के पैर उखड़ गए।
धड़ाक!

फिर एक ही छलांग में शेरबाज़ डगलस के पास जा पहुँचा। कंकाल अभी भी उसके पीछे था।

परन्तु डगलस ने तेजी से घूमकर एक वार किया और शेरबाज़ के हाथ से पिस्तौल छूटकर दूर जा गिरी।

पर शेरबाज़ के एक जोरदार घूंसे से डगलस लड़खड़ाता हुआ बढ़ते हुए कंकाल के सामने आ गया।

और कंकाल ने उसे ही दबोच लिया।

तभी डॉ॰ सेन ने चिल्लाकर कहा—

शेरबाज़ ने लपककर लाल बटन दबा दिया।

और कंकाल डगलस को छोड़ सीधा खड़ा हो गया।

मुझे अफसोस है कि मैं इसे जिन्दा न पकड़ सका!

फिर शेरबाज़ ने डॉ० सेन, उनकी बेटी माला और मि० ज़ैड को बंधनमुक्त कर दिया।
संयोग से मैं ठीक समय पर ही पहुँच गया।
हाँ, अगर आप न पहुंचते तो इस समय हम यहां ज़िंदा न खड़े होते।

जवाब नहीं आपका, मि० शेरबाज़!
लेकिन आप यहां पहुँचे कैसे, मि० ज़ैड?

परसों ही इस कब्रिस्तान के पास एक ग्रामीण की हत्या नर-कंकाल द्वारा कर दी गई थी। पुलिस विभाग से सूचना मिलते ही आज मैं यहां पहुँच गया था, परन्तु भीतर घुसने पर पकड़ लिया गया।

दूसरे दिन देश-भर के समाचारपत्रों में खूनी कंकाल की ही चर्चा थी।
रत टाइम्स
खूनी कंकाल का रहस्य खुल गया
हिन्दोस्ता
वैज्ञानिकों की हत्याओं के पीछे विदेशी षड्यन्त्र
टाइम्स
वैज्ञानिकों की हत्या करवाने वाला स्वयं भी मारा गया
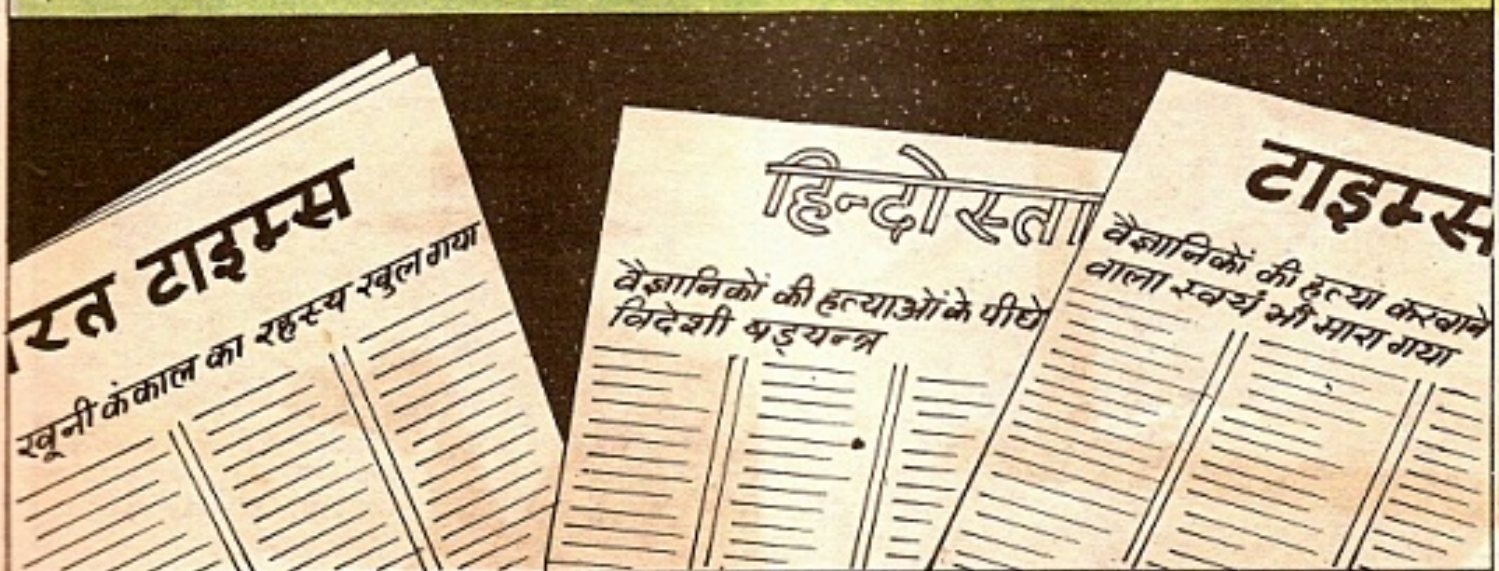
डॉ॰ सेन के बंगले पर—
डॉ॰ सेन, खूनी कंकाल के बारे में हमें विस्तारपूर्वक बताएं।

कमिश्नर साहब, यह कंकाल वास्तव में एक रोबोट है, जो कल-पुर्जों का बना हुआ है। इसे सुदूर नियंत्रण से चलाया जाता है। यह हवा में भी उड़ सकता है। और इसे जो भी निर्देश दिए जाएं, यह उनका पालन करता है ...

... इसका निर्माण मैंने और डॉ॰ बोस ने मिलकर किया था। हम दोनों के अलावा इसके बारे में किसी को भी मालूम नहीं था।
बधाई हो डॉ॰ सेन! हमारा प्रयोग सफल हुआ।
आपको भी बधाई हो डॉ॰ बोस!

अभी इसमें कुछ और सुधार किए जा सकते हैं। उसके लिए मैं अमेरीका जा रहा हूं। वहां से लौटकर हम इसे दुनिया के सामने पेश करेंगे।
ठीक है डॉ॰ सेन, जैसा आप उचित समझें।

परन्तु हमारा राज़ गुप्त न रह सका। डॉ॰ बोस के एक सहायक प्रो॰ आनंद ने हमारी बातचीत सुन ली।

प्रो॰ आनंद को एक डगलस नामक विदेशी ने बहुत सारा धन देकर अपने हाथ में कर रखा था। आनंद ने उसे सब कुछ बता दिया।
ठीक है प्रो॰ आनंद! डॉ॰ बोस का काम तुम्हारे हवाले है। मैं सेन से निपट लूंगा।

और गोपाल ने तुरन्त पुलिस को फोन कर दिया—

हैलो! पुलिस स्टेशन!

इंस्पेक्टर साहब, मैं डॉ॰ बोस के घर से उनका नौकर बोल रहा हूँ। अभी-अभी डॉ॰ साहब की हत्या उनके सहायक आनंद ने कर दी है।

हमारी टैक्सी का ड्राइवर जैसे ही टैक्सी से नीचे उतरा—

ड्राइवर की हत्या करने के बाद वे लोग हमें जबरदस्ती अपनी कार में बिठाकर एक अनजान जगह पर ले गए। उन हत्यारों का नेता डगलस ही था।

मुझे मजबूर होकर उसके कहने पर रोबोट बनाने और उसे चलाने के सभी ढंग बताने पड़े।

और हमारे सामने ही डगलस ने रोबोट को एक कंकाल का रूप देकर अपनी घृणित योजना के बारे में बताया—
हा-हा-हा—! डॉ० सेन, अब तुम अपनी आंखों से अपने सहयोगियों की मौत अपने ही बनाए रोबोट के हाथों से होते देखोगे।
नहीं डगलस! इसका प्रयोग ऐसे कामों में न करो।
!!

फिर जब मैंने अपने सहयोगियों की मौत अपनी आंखों से होते देखी तो मेरा दिल रो उठा।—
मुझे भी मार डालो डगलस! मेरे से यह सब नहीं देखा जाता।
अभी और देखोगे डॉ० सेन! अभी मेरा काम पूरा नहीं हुआ।

अभी तो प्रो० दारूवाला जीवित है। मैं भारत के अणु ऊर्जा पर अनुसंधान करने वाले सभी वैज्ञानिकों को खत्म करने आया हूँ। इसके बदले में मुझे बहुत धन मिलेगा डॉ०, बहुत सारा! हा-हा-हा-!

डैडी! आपको इस नीच को कुछ भी नहीं बताना चाहिए था। चाहे यह दुष्ट हमें जान से मार डालता।
ओह बेटी! मैं पहले ही क्यों न ऐसा सोच सका! धिक्कार है मुझ पर!

फिर डगलस ने प्रो० दारूवाला की हत्या भी करवादी। और बाद में जो कुछ हुआ उससे आप सब भली-भाँति परिचित हैं। मैं उस बहादुर नौजवान शेरबाज़ का फिर धन्यवाद करना चाहता हूँ, जिसने ठीक वक्त पर पहुँचकर हमारी जानें बचाईं।

लेकिन मि० शेरबाज़ आए ही नहीं। मैंने उन्हें फोन भी किया था।

तभी पुलिस कमिश्नर ने मुस्कराते हुए बताया—
शेरबाज़ अपना काम पूरा करने के बाद नज़र नहीं आया करता। मैं उसकी इस आदत से भली-भाँति परिचित हूँ।

उधर 'पक्षी विहार' में शेरबाज ग्रामीण लड़के बावले को टेप-रिकार्डर पर उसके गाए हुए गीत सुना रहा था—
ही-ही-ही-। साहब, क्या यह मेरी ही आवाज़ है?
हाँ-हाँ बावले, यह तुम्हीं गा रहे हो!
कितनी मधुर आवाज़ है!

समाप्त

अगले अंक में पढ़ें
शेरबाज की एक
रोंगटे खड़े कर देने
वाली कहानी—
चेहरे
का
चक्कर

मनोज पॉकेट बुक्स

के नये सैट में पढ़िये

राजहंस

का नया उपन्यास

सिसकता सवेरा

और

अमित

का नया उपन्यास

प्यार में सौदा नहीं